UNIT-1-

लिंग का अर्थ

लिंग को वैयाकरणों द्वारा यह कहकर परिभाषित किया है, कि जिससे किसी के स्त्री या पुरुष होने का बोध हो उसे लिंग कहते हैं।

मनुष्य दो रूपों में जन्म लेता है- स्त्री और पुरुष, जिसे प्रारम्भिक अवस्था में बालिका तथा बालक कहा जाता है। बालक तथा बालिकाओं के शारीरिक संरचना में ही विभेद नहीं होता है अपितु दोनों की रुचियों, अभिवृत्तियों तथा क्रियाकलापों में भी भिन्नता पायी जाती है।

लिंग के निर्धारण में जैविक मापदण्डों का प्रयोग किया जाता है- जो निम्न प्रकार है -

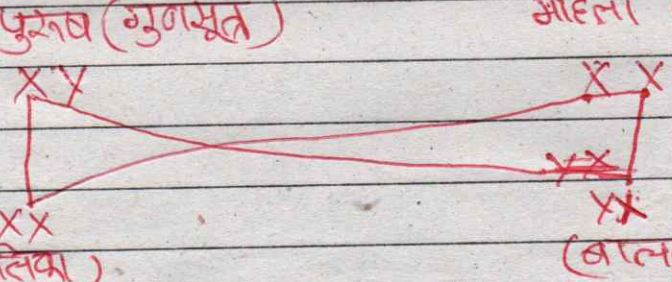

जैविक रूप में लिंग को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है कि जब स्त्री तथा पुरुष के XX गुणसूत्र मिलते हैं तब बालिका और जब स्त्री पुरुष के XY गुणसूत्र मिलते हैं तो बालक का निर्माण होता है

Date
Page 2

लिंगीय विभेद के कारण :-

1. मान्यताएँ एवम् परम्पराएँ
2. अशिक्षा
3. सरकारी उदासीनता
4. सामाजिक कुप्रथाएँ
5. संकीर्ण विचारधारा
6. जागरूकता का अभाव
7. अधिक तंगी
8. दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली
9. मनोवैज्ञानिक कारण

Date
Page 3

लिंगीय विभेदो की समाप्ति के उपाय:-

1. जन-शिक्षा का प्रसार
2. जागरूकता लाना
3. भ्रूणहत्या रोकने हेतु कठोर प्रबंधन तथा पालन
4. बालिका शिक्षा का प्रसार
5. शिक्षा प्रणाली में सुधार
6. बालिकाओं हेतु पृथक व्यावसायिक विद्यालयों की व्यवस्था।
7. सामाजिक कुप्रथायों पर रोक
8. सामाजिक परम्पराओं तथा मान्यताओं पर कुठाराघात
9. सुरक्षात्मक वातावरण
10. प्रशासनिक प्रयास
11. संवैधानिक उपचार

23/08/2021

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
मान्डेवपुर, ताखा, बलिया